2012

HINDI

(Major)

Paper : 2.2

(Ritikalin Kavya Dhara)

Full Marks : 80

Time : 3 hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions

1. पूर्ण वाक्य में उत्तर दीजिए : 1×10=10

(क) आचार्य शुक्ल के अनुसार रीति-काव्य के प्रवर्तक कौन हैं?

(ख) केशवदास रचित प्राप्य काव्य-ग्रन्थों की संख्या कितनी है?

(ग) किस कवि के प्रसंग में इन्द्रजीत का नाम उल्लेख होता है?

(घ) बिहारी ने लक्षण-ग्रंथ का निर्माण किया था या नहीं?

(ङ) 'ललित ललाम' किनकी रचना है?

(च) घनानन्द किस काव्य-धारा के कवि थे?

(छ) 'प्रीति पावस' किस कवि की कृति है?

(ज) भूषण किस ऐतिहासिक पात्र से प्रेरित हुए?

(झ) मतिराम के पिता का नाम क्या है?

(ञ) 'कविकुल कल्पतरु' के रचयिता कौन हैं?

2. अति संक्षेप में जवाब दीजिए : 2×5=10

(क) "टुटै टूटनहारू तरु वायुहि दीजत दोष।" यहाँ टूटने का क्या प्रसंग है?

(ख) "जोग-जुगति सिखए सबै, मनौ महामुनि मैन"—इस उक्ति में किसकी सीख किसे देने की बात है?

(ग) "नायिका-भेद सम्बन्धी विशेषता देव की अनूठी है।" सिद्ध कीजिए।

(घ) घनानन्द के पदों में प्रयुक्त 'सुजान' शब्द का तात्पर्य क्या है?

(ङ) 'ब्रजभाषा प्रवीण' की संज्ञा घनानन्द को क्यों दी जाती है?

3. संक्षेप में उत्तर लिखिए : 5×4=20

(क) "एक ओर आचार्यत्व और कवित्व, दूसरी ओर हृदयहीन और सहृदय"—कवि केशव के प्रसंग में यह कहना कहाँ तक सार्थक है?

अथवा

"'बिहारी सतसई' पर जितनी टीकाएँ लिखी गईं उतनी किसी कृति पर नहीं।" इसकी पुष्टि करते हुए 'बिहारी सतसई' की लोकप्रियता के बारे में लिखिए।

(ख) देव का साहित्यिक परिचय दीजिए।

अथवा

काव्य-भाषा की दृष्टि से मतिराम की विशेषताएँ रेखांकित कीजिए।

(ग) रीतिकालीन कवि भूषण ने सूर्य और हिमालय को प्रतीकार्थ में प्रयोग किसके लिए किया है? इसका खुलासा कीजिए।

अथवा

भूषण-काव्य की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(घ) सेनापति की कृति 'कवित्व-रत्नाकर' का परिचय दीजिए।

अथवा

"रीतिकालीन साहित्य में लोक जीवन की व्याख्या प्रायः कम ही हुई है।" इस बारे में आपका क्या विचार है?

4. अधोअंकित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8×2=16

(क) क्षत्रिय ह्वै गुरु लोगन को प्रतिपाल करें।
भूलिहु तौ तिनके गुन औगुन जी न धरें।
तौ हमको गुरुदोष नहीं अब एक रती।
जौ अपनी जननी तुम ही सुख पाइ हती॥

अथवा

नेह न नैननु कौं कछू, उपजी बड़ी बलाइ।
नीर भरे नितप्रति रहै, तऊ न प्यास बुझाइ॥

(ख) रूप के मन्दिर तो मुख में मनि-
दीपक-से दृग है अनुकूले।
दर्पन में मनि, मीन सलील
सुधाकर नील-सरोज-से फूले।

अथवा

लाजनि लपेटी चितवनि भेद भाय भरी,
लसति ललित लोल-चख तिरछानि मैं।
छबि को सदन गोरो बदन, रुचिर भाल,
रस निचुरत मीठी मृदु मुसक्यानि मैं।

5. "अलंकारप्रियता आड़े आने पर भी केशवदास का प्रकृति चित्रण अनूठा है।" इसका विवेचन कीजिए। 12

अथवा

बिहारी की श्रृंगार-योजना पर एक लेख प्रस्तुत कीजिए।

6. घनानन्द के काव्य-वैभव का निरूपण कीजिए। 12

अथवा

रीतिकालीन कवियों में भूषण का स्थान निर्धारित कीजिए।

★★★